CBSE Class 8 Social Science Important Questions History Chapter 4 आदिवासी, दीकु और एक स्वर्ण युग की कल्पना

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.
दीकु किसे कहा जाता था?
उत्तर:
जनजातियों द्वारा बाहरी लोगों को दीकु कहा जाता था।

प्रश्न 2.
बिरसा मुण्डा के अनुयायी दो अन्य जनजातीय समूहों के नाम दीजिए।
उत्तर:

- संथाल
- उराँव।

प्रश्न 3.
परती भूमि किसे कहते हैं?
उत्तर:
ऐसी जमीन जो कुछ समय के लिए बिना खेती छोड़ दी जाये ताकि उसकी मिट्टी पुनः उपजाऊ हो जाये, परती भूमि कहलाती है।

प्रश्न 4.
खोंड आदिवासी समुदाय कहाँ रहता है?
उत्तर:
खोंड आदिवासी समुदाय उड़ीसा के जंगलों में रहता है।

प्रश्न 5.
खोंड अपनी आजीविका कैसे चलाते थे?
उत्तर:
खोंड अपनी आजीविका शिकार एवं संग्रहण द्वारा चलाते थे।

प्रश्न 6.
जो चीजें वनों में उत्पादित नहीं होती थीं उन्हें आदिवासी किस प्रकार प्राप्त करते थे?

उत्तर:
ऐसी चीजों को आदिवासी अदला-बदली अथवा खरीद-फरोख्त द्वारा प्राप्त करते थे।

प्रश्न 7.
पशुपालन से आजीविका प्राप्त करने वाली कोई दो जनजातियों के नाम दीजिए।
उत्तर:

- पंजाब के वन गुज्जर
- कश्मीर के बकरवाल।

प्रश्न 8.
वन विभाग ने वन गांव क्यों बसाए?
उत्तर:
रेलवे स्लीपर्स के लिए पेड़ काटने तथा लकड़ी को ढोने हेतु सस्ते श्रम की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए वन गांव बसाये गये।

प्रश्न 9.
महुआ के बारे में आप क्या जानते हैं?
उत्तर:
महुआ एक फूल है जिसे खाया जाता है या शराब बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

प्रश्न 10.
कौनसा आदिवासी समूह रेशम के कीड़े पालता था?
उत्तर:
वर्तमान झारखण्ड में स्थित हजारीबाग के आस-पास रहने वाले 'संथाल' आदिवासी रेशम के कीड़े पालते थे।

प्रश्न 11.
सोंग्रम संगमा द्वारा विद्रोह कब और कहाँ हुआ?
उत्तर:
सोंग्रम संगमा द्वारा विद्रोह सन् 1906 में असम में हुआ।

प्रश्न 12.
बिरसा आन्दोलन का क्या उद्देश्य था?
उत्तर:

- आदिवासी समाज में सुधार लाना
- दीकुओं को जनजातीय क्षेत्रों से बाहर करना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.
बिरसा के बारे में क्या कहा समझा जाता था?
उत्तर:

- लोगों का कहना था कि बिरसा भगवान का अवतार है। वह सभी बीमारियों को दूर कर सकता है। वह अनाज को भी कई गुना कर सकता है।
- बिरसा ने स्वयं के बारे में घोषणा की कि ईश्वर ने उसे अपने लोगों के कष्ट को दूर करने तथा उन्हें दीकुओं की गुलामी से मुक्त कराने के कार्य के लिए भेजा।

प्रश्न 2.
मुंडा तथा उस क्षेत्र के अन्य जनजातीय लोग ब्रिटिश शासन से क्यों नाराज थे?
उत्तर:

- वे ब्रिटिश शासन के अंतर्गत हो रहे परिवर्तनों को देखकर तथा इससे होने वाली परेशानियों को झेलकर परेशान थे।
- उन्हें लगता था कि उनके जीवन जीने का पारंपरिक तरीका कहीं खो-सा गया है। उनकी आजीविका खतरे में थी। उन्हें लगता था कि उनका धर्म एवं उनकी संस्कृति खतरे में हैं।

प्रश्न 3.
वन उत्पादों की आपूर्ति कम होने पर जनजातीय लोग क्या करते थे?
उत्तर:

- कुछ जनजातीय लोग पड़ोस के गाँवों में जाकर छोटी-मोटी नौकरियाँ कर लेते थे।
- कुछ लोग खेतिहर मजदूर के रूप में काम करते थे।
- कुछ अन्य लोग बोझा ढोने का काम करते थे या फिर सड़क निर्माण कार्य में मजदूरों के रूप में काम कर लेते थे।

प्रश्न 4.
बैगा लोग दूसरों के लिए काम करने से क्यों कतराते थे?
उत्तर:

- बैगा लोग स्वयं को जंगल की सन्तान मानते थे जिसे केवल वन उत्पादों से अपना जीवन-यापन करना चाहिए
- बैगा लोगों का यह मानना था कि किसी बैगा के लिए मजदूरी करना अपमान की बात थी।

प्रश्न 5.
जनजातीय लोग व्यापारियों तथा महाजनों को अपनी मुसीबत की जड़ क्यों समझते थे?
उत्तर:

- व्यापारी उन्हें अधिक कीमत पर अपना सामान देते थे जबकि उनसे उनका सामान सस्ती दरों पर प्राप्त करते थे।
- सूदखोर महाजन लोग उन्हें ऊँची ब्याज दरों पर ऋण देते थे।
- इसके कारण ये लोग कर्ज एवं गरीबी के दलदल में फँस जाते थे। इसी कारण वे व्यापारियों एवं महाजनों को अपनी मुसीबत की जड़ समझते थे।

प्रश्न 6.
कुछ पशुपालक जनजातियों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:

- पंजाब की पहाड़ियों में रहने वाले वन गुज्जर तथा आंध्रप्रदेश के लबाड़िया लोग मवेशियों का पालन करते थे।
- हिमाचल प्रदेश में कुल्ल के गद्दी समुदाय के लोग गड़रिए थे।
- कश्मीर के बकरवाल लोग बकरियों का पालन करते 'थे।

प्रश्न 7.
छोटा नागपुर के मुंडा समाज में भू-स्वामित्व के अधिकारों की चर्चा कीजिए।
उत्तर:

- मुंडा समाज में जमीन पर पूरे कबीले का अधिकार होता था।
- कुल के सभी सदस्यों को उन मूल निवासियों का वंशज माना जाता था जिन्होंने पहली बार वनों को काटकर कृषि भूमि को तैयार किया था।

अतः सभी लोगों का भूमि पर समान अधिकार था।

प्रश्न 8.
औपनिवेशिक काल में आरक्षित वनों से क्या आशय है?
उत्तर:

- अंग्रेजों ने सभी जंगलों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के बाद कुछ जंगलों को आरक्षित वन घोषित कर दिया था।
- ये ऐसे जंगल थे जहाँ अंग्रेजों की जरूरतों के लिए इमारती लकड़ी पैदा होती थी।
- इन जंगलों में लोगों को स्वतन्त्रतापूर्वक घूमने, झूम खेती करने, फल इकट्ठा करने या पशुओं का शिकार करने की इजाजत नहीं थी।

प्रश्न 9.
रेलवे स्लीपर्स हेतु पेड़ काटने तथा लकड़ी ढोने के लिए अंग्रेज अधिकारियों ने मजदूरों का इंतजाम किस प्रकार किया?
उत्तर:

- अंग्रेज अधिकारियों ने झूम अथवा घुमंतू काश्तकारों को जंगल में जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े दिये जिन पर वे खेती कर सकते थे।
- इसके लिए यह शर्त लगाई गई कि गाँवों में रहने वालों को वन विभाग के लिए मजदूरी करनी होगी तथा जंगलों की देखभाल करनी होगी। इस प्रकार उन्होंने सस्ते श्रम का इंतजाम कर लिया।

प्रश्न 10.
औपनिवेशिक वन कानूनों के विरोध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
उत्तर:

- अनेक आदिवासी समूहों ने औपनिवेशिक वन कानूनों का विरोध किया। उन्होंने नए नियमों का पालन करने से इनकार कर दिया और उन्हीं तौर-तरीकों से चलते रहे जिन्हें सरकार गैर-कानूनी घोषित कर चुकी थी।
- कई बार उन्होंने खुलेआम बगावत भी कर दी। 1906 में सोंग्रम संगमा द्वारा असम में और 1930 के दशक में मध्यप्रांत में हुआ वन सत्याग्रह इसी तरह के विद्रोह थे।

प्रश्न 11.
काम की तलाश में घर से दूर जाने वाले आदिवासियों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:

- काम की तलाश में घर से दूर जाने वाले आदिवासियों की दशा बहुत खराब थी।
- असम के चाय बागानों तथा झारखण्ड की कोयला खदानों में आदिवासियों को बड़ी संख्या में भर्ती किया गया।
- इन लोगों को ठेकेदारों की मार्फत भर्ती किया जाता था। ये ठेकेदार उन्हें बहुत कम वेतन देते थे तथा वापस घर भी नहीं लौटने देते थे।

प्रश्न 12.
अंग्रेजों की नीतियों एवं अपने शोषण के विरुद्ध आदिवासियों के प्रतिरोध का वर्णन कीजिये।
उत्तर:

- उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों के दौरान देश के विभिन्न भागों में आदिवासी समूहों ने नये कानूनों, अपने व्यवहार पर लगी बंदिशों, नये करों तथा व्यापारियों एवं महाजनों द्वारा किये जा रहे शोषण के विरुद्ध अनेक बार विद्रोह किया।
- 1831-32 में कोल आदिवासियों ने, 1855 में संथालों ने, 19वीं सदी के आखिरी दशक में बिरसा मुण्डा ने विद्रोह किया। 1910 में मध्य भारत में बस्तर विद्रोह तथा 1940 में महाराष्ट्र में वर्ली विद्रोह हुआ।

प्रश्न 13.
अंग्रेजों के आने से पहले आदिवासियों के मुखियाओं के क्या अधिकार थे?
उत्तर:

- अंग्रेजों के आने से पहले बहुत सारे इलाकों में आदिवासियों के मुखियाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान होता था।
- उनके पास औरों से ज्यादा आर्थिक ताकत होती थी तथा वे अपने इलाके पर नियंत्रण रखते थे।
- कई जगह उनकी अपनी पुलिस होती थी और वे जमीन एवं वन प्रबन्धन के स्थानीय नियम स्वयं बनाते थे।

प्रश्न 14.
घुमंतू किसानों की दो विशेषताएँ बताइये।
उत्तर:

- घुमंतू किसान मुख्य रूप से पूर्वोत्तर और मध्य भारत की पर्वतीय और जंगली पट्टी में ही रहते थे।

- इन समुदायों की जिन्दगी जंगलों में बेरोकटोक आवाजाही और फसल उगाने के लिए जमीन और जगलों के इस्तेमाल पर आधारित थी।

प्रश्न 15.
बिरसा के सुधारवादी विचारों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:

- बिरसा ने अपने लोगों से शराब छोड़ने को कहा। उसकी राय में शराब न केवल लोगों के वैयक्तिक एवं पारिवारिक जीवन को प्रभावित कर रही थी बल्कि, समाज भी इससे बुरी तरह प्रभावित होता था।
- बिरसा ने लोगों से अपील की कि वे अपने गाँवों में साफ-सफाई रखें।
- बिरसा ने लोगों को डायन तथा जादू-टोने में विश्वास न करने को कहा।

प्रश्न 16.
बिरसा आंदोलन के क्या राजनीतिक उद्देश्य थे?
उत्तर:

- बिरसा मिशनरियों, महाजनों, हिंद जमींदारों तथा सरकार को अपने क्षेत्र से बाहर निकाल देना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि अंग्रेज अधिकारी वहाँ रहें।
- इस आंदोलन का उद्देश्य बिरसा के नेतृत्व में मुंडा राज स्थापित करना था।

प्रश्न 17.
बिरसा आंदोलन का क्या महत्त्व था?
उत्तर:
इस आंदोलन के दो महत्त्व थे-

- इसने औपनिवेशिक सरकार को जनजातियों के हक में वन अधिनियमों में सुधार करने के लिए मजबूर कर दिया ताकि दीकु लोग जनजातियों की जमीन पर आसानी से कब्जा न कर सकें।
- इस आंदोलन से साबित हो गया कि जनजातियाँ अन्याय का विरोध करने एवं औपनिवेशिक सरकार के दमनात्मक एवं शोषक शासन के खिलाफ अपना गुस्सा प्रकट करने में सक्षम हैं।